फतेहपुर-उ.प्र.। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से मुलाकात करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु.सीता, ब्र.कु. दिव्या तथा अन्य।

जालंधर-आदर्शनगर(पंजाब)। ज्ञान चर्चा के पश्चात् हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विजय बहन व ब्र.कु. संधीरा। साथ हैं कुमार स्वामी,शीतल विज,मुख्य संपादक दैनिक सवेरा समाचार पत्र एवं देवी तालाब मंदिर प्रबंधक कमेटी के प्रधान।

आबू रोड-मानसरोवर(राज.)। पाँच दिवसीय अकल्ट परिवार मिलन राजयोग शिविर के द्वीप प्रज्वलन कार्यक्रम में राज्य मंत्री श्यामवीर सैनी,उत्तराखंड सरकार, उत्तराखंड संस्कृत शिक्षा निदेशक व संस्कृत भारती के अध्यक्ष डॉ आनन्द भारद्वाज, विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ के उपकुलपति डॉ. श्रीगोपाल नारसन, ज्योतिष गुरु गोपाल राजू, आध्यात्मिक चिंतक अर्जुन राम, ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी, ब्र.कु. आरती, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. बिन्दु, ब्र.कु. सुशील तथा अन्य अतिथिगण मौजूद रहे।

ब्रह्मपुर-गिरी रोड(ओडिशा)। प्रभु उपहार स्ट्रीट सेंटर में विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए रशिया की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सन्तोष दीदी, लेफ्टिनेंट जनरल आर.सी. श्रीकान्त, कमांडेड एएडी कॉलेज की धर्मपत्नी असीमा श्रीकान्त, उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी तथा ब्रह्माकुमारी बहन।

कायमगंज-उ.प्र.। नए वर्ष के उपलक्ष्य में उपजिलाधिकारी अतुल कुमार सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथिलेश। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति।

भगवान मिलने के बाद भी सम्पूर्ण आनंद क्यों नहीं...!!!

1. मिलन और स्थिति में अंतर

भगवान से मिलन होना एक घटना है, पर श्रेष्ठ स्थिति में टिकना एक अभ्यास है। जैसे कोई दीपक जल तो जाए, लेकिन यदि हवा तेज हो तो लौ काँपने लगती है। उसी प्रकार, भगवान की पहचान और मिलन के बाद भी यदि पुराने संस्कारों की हवा चलती रहे, तो आनंद की लौ स्थिर नहीं रह पाती। जैसे कोई व्यक्ति शुद्ध जल के स्रोत तक पहुँच जाए, लेकिन उसे पीने की आदत ही न डाले, तो प्यास कैसे बुझेगी? भगवान मिलना स्रोत तक पहुँचना है, पर रस लेना रोज़ का अभ्यास है।

"यह एक बहुत ही सूक्ष्म लेकिन सच्चा अनुभव है कि भगवान से मिलन हो जाने के बाद भी कभी-कभी जीवन में वह सम्पूर्ण आनंद, तृप्ति और श्रेष्ठता की अवस्था स्थायी नहीं रहती। ऐसा लगता है जैसे जल के सागर के पास खड़े होकर भी प्यास बनी रहती है। यह विरोधाभास नहीं, बल्कि आध्यात्मिक यात्रा का गहरा सत्य है, जिसे समझना और जानना आवश्यक है।

2. संस्कारों का बोझ आनंद को ढक देता है

कई जन्मों के संस्कार क्रोध, अपेक्षा, अधिकार, अधीरता एकदम समाप्त नहीं हो जाते। जब कोई परिस्थिति इन संस्कारों को छू लेती है, तो आत्मा अपनी ऊँची स्थिति से नीचे उतर आती है। जैसे साफ शीशे पर थोड़ी-सी धूल पड़ जाए, तो प्रतिबिम्ब धुँधला दिखने लगता है। शीशा टूटा नहीं है, केवल सफाई चाहिए। वैसे ही आत्मा अशुद्ध नहीं हुई, केवल स्मृति की सफाई चाहिए।

3. बाहर की खुशी और भीतर के आनंद का भ्रम

कई बार हम भगवान से मिलने के बाद भी परिस्थितियों से सुख चाहते रहते हैं। जब परिस्थितियाँ मनचाही नहीं होती, तो मन उदास हो जाता है। जैसे राजा के पास खज़ाना होते हुए भी अगर वह रोज़ प्रजा की सराहना पर निर्भर हो, तो वह राजा होते हुए भी असंतुष्ट रहेगा। वैसे ही आत्मा के पास ईश्वरीय खज़ाना होते हुए भी, जब वह बाहरी स्वीकृति चाहती है, तो आनंद पूरा नहीं हो पाता।

4. आनंद के लिए पवित्रता अनिवार्य

जहाँ दृष्टि, वृत्ति और कृति में मिलावट होती है, वहाँ आनंद टिक नहीं सकता। पवित्रता आनंद की नींव है। शुद्ध घी में मिठास स्वाभाविक होती है, लेकिन यदि उसमें थोड़ा-सा पानी मिल जाए, तो स्वाद बिगड़ जाता है। वैसे ही जीवन में थोड़ी-सी अपवित्रता भी आनंद की मिठास को कम कर देती है।

5. समाधान - अनुभव से अभ्यास तक

संपूर्ण आनंद पाने के लिए ज्ञान को अनुभव और अनुभव को अभ्यास में बदलना आवश्यक है...

1) दिन में बार-बार आत्म-स्मृति
2) हर कर्म से पहले एक पल के लिए शान्त स्थित होना
3) हर आत्मा के लिए शुभ भावना
4) प्रतिदिन सोने से पहले दिनभर की शांति की स्टेज की चेकिंग

जैसे संगीत सीखने वाला रोज़ रियाज़ करता है, तभी सुर स्थिर होते हैं। एक दिन अच्छा गा लेने से कलाकार नहीं बनता।

भगवान मिलने के बाद भी यदि सम्पूर्ण आनंद की स्थिति नहीं बनती, तो निराशा का विषय नहीं, बल्कि और ऊँचा उड़ने का संकेत है। जब आत्मा निरंतर अभ्यास द्वारा अपने संस्कारों को शुद्ध करती है, तब भगवान का मिलन केवल स्मृति नहीं रहता, बल्कि हर श्वास में आनंद बन जाता है। यही सच्ची तृप्ति और यही पूर्ण सौभाग्य है।

टोंक-राज.। सुभाष नगर में नवनिर्मित प्रभु स्मृति धाम भवन के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए जयपुर उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकला दीदी,जयपुर,वैशाली नगर, ब्र.कु. सिस्टर पेट्रा,जर्मनी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्पणा, पूर्व नगर परिषद सभापति लक्ष्मी जैन तथा अन्य।

अलीगढ़-खुर्जीर पुरी(उ.प्र.)। जीएसटी सहायक आयुक्त डॉ. एकता गुप्ता को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता।

सिमराही बाज़ार-बिहार। अखिल भारतीय साधु-संत एवं समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए 'स्वर्णिम भारत के निर्माण में आध्यात्मिकता का योगदान' विषय पर आयोजित सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए नगर पंचायत के विभिन्न क्षेत्रों से आये साधु-संत, पार्षदगण, समाजसेवी एवं ब्र.कु. बबीता।

सरकाघाट-हि.प्र.। बाढ़ से प्रभावित परिवारों को कपड़े, कंबल व अन्य सहायता प्रदान करते हुए ब्र.कु. निर्मला, ब्र.कु. सुरक्षा, पंचायत प्रतिनिधि तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

शांतिवन-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के मीडिया विंग की सक्रिय सेवाधारी ब्र.कु. वैशाली को कर्मयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एम.ए. जनसंचार एवं पत्रकारिता पाठ्यक्रम की परिक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उनको डिग्री प्रदान करते हुए केबीसीएनएमयू के कुलपति डॉ. विजय लक्ष्मीनारायण महेश्वरी,जलगांव।